International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-08-2019; Accepted: 04-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 04-05

प्रेमचंद के उपन्यास में स्त्री जीवन का यथार्थ (कर्मभूमि के विशेष सन्दर्भ में)

बेबी विश्वकर्मा
शोधार्थी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, दोइमुख, भारत

प्रस्तावना

प्रेमचंद का युग नवीन दृष्टिकोण और प्राचीन मान्यताओं के बीच का संगम काल था. एक वर्ग ऐसा था जो बचपन से सीखे मध्यकालीन मानदंडो के आधार पर जीवन को देख रहा था तो दूसरा वर्ग वह था जो आधुनिक जीवनभंगी को अपना रहा था। प्रेमचंद की स्त्री विषयक दृष्टिकोण समन्वयकारी है जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संमिश्रण है. प्रेमचंद के समय में नारी की स्थिति अच्छा न था। वे हर तरफ से दमित व पीड़ित थी। एक तरफ तो पारिवारिक संपत्ति में उसका कोई हक़ नहीं था तो दूसरी और आर्थिक रूप से भी वह पुरुष पर आश्रित थी। सामाजिक स्तर पर वह या तो केवल घर संभालने वाली सामान्य स्त्री थी या तो वेश्या थी। विवाह ही लड़कियों के जीवन का परम उदेश्य माना जाता था। प्रेमचंद नारी के पीड़ा से अभिभूत थे। उनकी पहली हिन्दी उपन्यास सेवादन नारी केन्द्रित है। प्रेमचंद युगीन समाज में वेश्याओं को नीच समझा जाता था। उनको समाज का अनिष्टकारी अंग माना जाता था। ऐसे काल में प्रेमचंद सेवासदन लिखकर वेश्या और नारी जीवन के व्यथा के प्रति सहानुभूति जताते हैं। प्रेमचंद यह दिखाते हैं कि किस प्रकार नारी को आर्थिक,सामाजिक दासता के बोझ तले दबना पड़ता है। किस प्रकार उसकी आत्मसम्मान की रोज हत्या की जाती है। जिस समय में नारी को पुरुषों से हेय समझा जाता था उस समय प्रेमचंद सशक्त नारी चरित्रों का निर्माण कर नारी के पक्ष मे खड़े थे। नारी शिक्षा, अनमेल विवाह, वेश्या समस्या, सम अधिकार आदि अनेक विषयों को लेकर प्रेमचंद नारी संबन्धित रचनाएँ लिख रहे थे। उनके नारी पात्र सशक्त हैं,जीवंत हैं। चाहे वह सेवासदन की सुमन हो या गबन की जालपा अथवा गोदान की धनिया अथवा सिलिया।

कर्मभूमि प्रेमचंद की प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका मूल स्वर राष्ट्रवादी है। परंतु यहाँ भी नारी जीवन के अनेक पहलुओं को प्रेमचंद ने दिखाया है। उनहोने कर्मभूमि उपन्यास के नारी चरित्रों का निर्माण अत्यंत बखूबी से किया है। प्रतेक स्त्री पात्र एक दूसरे से भिन्न है तथा समाज के किसी न किसी पक्ष की प्रतिनिधि बनकर सामने आयी हैं। उपन्यास की प्रमुख पात्र सुखदा प्रेमचंद की ही विचारों की प्रतिनिधित्व करती है,ऐसा कहा जा सकता है। उसमें पारंपरिक मूल्य भी है साथ ही वह आधुनिक भी है। सुखदा के जरिये प्रेमचंद ने आधुनिक बनते समाज के उस स्त्री वर्ग को दिखाया है जो किताबें पड़ती है, सिनेमा देखती है, खुली विचारों की है, स्वतंत्र है। सुखदा के जरिये प्रेमचंद मध्यकालीन संस्कारों से मुक्ति का प्रयत्न करते हैं। समाज और परिवार द्वारा बहिष्कृत बलात्कृत स्त्री को सुखदा अपने घर में जगह देना चाहती है और जब अमरकांत उससे पूछता है की क्या उसे घृणा न होगी? तो सुखदा कहती है- "अगर में कहूँ न होगी तो असत्य होगा।...पर संस्कारों को मिटाना होगा। उसने कोई अपराध नहीं किया, फिर सजा क्यों दी जाए?"[1] इन बातों में कितनी सच्चाई है। वह अपनी खामी जानती है और उसे दूर करना भी चाहती है। सुखदा मध्यकालीन मान्यताओं से पोषित समाज में पली बढ़ी है। इसकारण उसके हृदय में उन मान्यताओं का होना स्वाभाविक है। परंतु प्रसंसनीय यह है की वह उन संस्कारों से उभरना चाहती है। वही देहाती लड़की जब दोषी सिपाहियों की हत्या कर डालती है तो उसके हित में सबसे पहले सुखदा ही खड़ी होती है। समाज के तथाकथित नेता तो केवल अपने भाषण देकर कर्तव्य की समाप्ती मान लेते हैं. सुखदा का मानना है की उस लड़की ने कोई अपराध नहीं किया है। जब उसका साथ देनेवाला कोई नहीं था तो उसने खुद ही न्याय किया, वह अपराधी नहीं है। उसे किसी भी प्रकार से सजा नहीं होनी चाहिए। सुखदा एक सशक्त नारी पात्र के रूप में उभरती है जो न्याय के पक्ष में लड़ती है चाहे वह बलात्कृत स्त्री के हक के लिए हो, हरिजनों के मंदिर प्रवेश का प्रसंग हो या फिर गरीबों की उत्थान के लिए हो. समाज के अन्यायपूर्ण मान्यताओं पर वह प्रश्न उठाती है। सुखदा कहती है की पुरुष को समाज में कुछ भी करने की स्वतंत्रता क्यों प्राप्त है। ऐसा क्यों है की जो मनचाहे वह कर ले और स्त्री को ही पतिव्रता बनकर रहना पड़ता है। सुखदा नारी के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो वर्ग अपने अधिकारों को पहचान रही थी। किसी से दमित होकर जीना इन्हे मंजूर नहीं। उसमे विद्रोह की भावना है। इसीकारण जब अमरकांत उसके साथ धोखा करता है तो वह उसे माफ नहीं करती, उसे मनाने भी नहीं जाती। वह प्रगितिशील विचारों की नारी है। हजारों गलती करने पर भी पति को परमेश्वर माने, ऐसी वह नहीं। उसमे आत्मसम्मान है, स्वाभिमान है। वह यह जानती है की ऐसा व्यभिचारी कार्य वह करती तो अमरकांत उसे कतई माफ नहीं करता। इसके विपरीत उसे मारने के लिए ही चला आता। इसकारण अमरकांत के घर छोड़ने पर न ही वह उसके पास उसे मनाने के लिए जाती है और न ही पति वियोग में रोती कराहती रहती है। यह घटना सुखदा की जीवन को नया मोड़ देती है। दांपत्य जीवन के पराजय से वह टूट नहीं जाती। बल्कि उसका मनोबल और आत्मसम्मान बढ़ ही जाती है। वह समाज को यह दिखा देती है की जीवन मे कुछ कर दिखाने के लिए किसी के सहारे की ज़रूरत नहीं है। स्त्री किसी की आश्रित नहीं है। उसका अपना मनोबल ही उसे जीवन में आगे ले जाने के लिए काफी है।

हमारे समाज में आज भी जिसके साथ बलात्कार होता है उसे ही हीन दृष्टि से देखा जाता है। प्रेमचंद ने मुन्नी के जरिये समाज की उस संवेदनहीनता को दिखाया हैं जहां बलात्कार होने पर उसकी सजा अपराधी को नहीं बल्कि पीड़ीत को भुगतना पड़ता है। सारा समाज उसे पतित समझकर उसे घृणा की दृष्टि से देखता है, उसका बहिष्कार करता है। अपराध किसी और का होता है और दंड किसी ओर को मिलती है. मुन्नी अपने परिवार से अत्यंत प्रेम करती है इसीकारण पति के अनेक मिन्नतों के बावजूद वह लौटने को तैयार नहीं होती। क्योंकि उसके मन में समाज का डर बसा था। भारतीय समाज में एक

स्त्री को बचपन से ही यौन सुचिता का पाठ पढ़ाया जाता है. इसी यौन सुचितावादी मानसिकता का शिकार होने के कारण मुन्नी के मन में खुद के लिए ही घृणा भर जाता है। बलात्कार से सम्बंधित मुख्य समस्या उससे जुडी सोशल स्टिग्मा है जो स्त्री की मानसिक असंतुलन का कारण बनता है. मुन्नी का चरित्र सभी पीड़ित स्त्रियों के लिए प्रेरणा है। अपना सबकुछ खोने के बाद भी वह हार नहीं मानती और चमारो के गाँव में जाकर ज़िंदगी की एक नयी शुरुआत करती है। सारे गाँव को वह अपना बना लेती है। वह सभी को आशा देती है, पुनः जीवन जीना सिखाती है, प्रेम करना सिखाती है. मुन्नी अपने जीवन की शुरुआत नए सिरे से कर पाती है क्योंकि चमारों के गांव में उसे कोई नहीं जानता जिसकारण मुन्नी अपने अतीत से जुड़ी आशंका, अपराधबोध, सामाजिक अपमान से मुक्त है. मुन्नी के जरिए प्रेमचंद एक निर्दोष बलात्कृत स्त्री की जीवन संघर्ष को पाठक के सामने रखते हैं जिसकी त्रासदी का मूल कारण समाज की झूठी मान्यताएँ हैं जिस कारण मुन्नी को दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है, गुमनामी में जीना पड़ता है.

नैना के जरिए प्रेमचंद ने अनमेल विवाह और उसके कुपरिणाम को दिखाया है। यह जानते हुए भी की मनीराम अच्छा व्यक्ति नहीं है वह उससे शादी कर लेती है। क्योंकि पिता के इच्छा के विरुद्ध नहीं जाना चाहती। मनीराम चाहता है की उसको ऐसी पत्नी मिले जो अंग्रेजों से बात कर सके जो उसके व्यापार के प्रसार के लिए सहायक होगा। परंतु नैना वैसी नहीं है। अतः वह उसका अपमान करता है और द्वितीय विवाह करना चाहता है। परंतु प्रेमचंद को स्त्री का ऐसा अपमान स्वीकार नहीं। इसीकारण वे सुखदा के जरिये मनीराम को करारा जवाब देते है, उसे फटकारते हैं।

कर्मभूमि उपन्यास के स्त्री पात्र पुरुषों से अधिक स्थिर और सशक्त हैं। यहाँ सुखदा, सकीना अमरकांत और सलीम के लिए प्रेरणा बनती है। वे जब भी भटकते हैं सुखदा और सकीना उनका मार्गदर्शन करती हैं। पिता के धन ऐश्वर्य को छोड़ कर चले गए अमरकांत को सकीना परिश्रम करने के लिए प्रेरित करती है। तथा दूसरे स्थान पर सुखदा के समाजसेवा और उसके जैल जाने की बात को सुनकर अमर भी खुद को सुधार लेता है। नेतृत्व के गर्व से गर्वित अमरकांत अपने राह से भटक जाता है परंतु सुखदा के कारण वह फिर से एक बार चमारों का सफल नेतृत्व करता है। उन्हे जमींदार के सामने झुकने नहीं देता और एक आन्दोलन खड़ा कर देता है। सकीना के प्रेम से सलीम में भी परिवर्तन आता है। अपने अफ़सरी रोब छोड़कर वह भी चमारों के विरोध में शामिल होता है। प्रेमचंद ने स्त्री को पुरुष से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं समझते। वे उन्हे एक दूसरे के पूरक मानते है।

प्रेमचंद संधिकाल के रचनाकार थे। उनका युग परंपरा और आधुनिकतावादी विचारधारा का संगम काल था। किसी भी रचनाकार पर अपने युगीन समाज का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। और प्रेमचंद पर भी यह प्रभाव पड़ा। उनका समाज मध्यकालीन रूढ़िवादिता से मुक्त न था। नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण संकीर्ण था। ऐसे समाज में प्रेमचंद नारी संबंधी रचनाओं का निर्माण करते हैं। नारी महत्ता, उसके शक्ति को, नारी जागरण को दिखाते है। नारी के ऊपर कोई अत्याचार हो यह उन्हे मंजूर न था। हमारे समाज में जहाँ एक तरफ देवी मानकर स्त्री की पूजा की जाती है तो दूसरी ओर यथार्थ में अबला, अधम मानकर उसी का शोषण भी होता है. इसके विपरीत प्रेमचंद वास्तव में भी स्त्री को पूजनीय मानते थे. वे चाहते थे कि स्त्री का सम्मान हो क्योंकि वह दया, ममता, क्षमा, त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति है. यही कारण है कि सुखदा, नैना जैसी पात्रों की परिणति उपन्यास में देवीय स्वरुप में होती है तथा कथा के अंत में सुखदा भी अमरकांत को पुनः स्वीकार लेती है. इन्हीं सन्दर्भों में प्रेमचंद से थोड़ी चुक हो जाती है क्योंकि स्त्री का देवीय स्वरुप अतिवादी विचारधारा का परिणाम है. एक स्त्री पूर्णतः मानवी है, एक मानव के हेसियत से ही वह सम्मान की हक़दार है तथा संपूर्ण मानवीय गुणों-अवगुणों के साथ वह स्वीकार्य है. उस पर देवीत्व के गुणों को आरोपित करना समीचीन नहीं है. प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि की खासियत यह है कि उन्होंने पहली बार स्त्री को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में,'व्यक्ति'के रूप में प्रस्तुत किया. स्त्री सम्बन्धी कई भ्रामक विचारों को तोड़ते हुए उन्होंने घर की देहलीज को लांघ कर आत्मनिर्भरशील बनती स्त्री छवि को केंद्र में लाया. चूँकि प्रेमचंद यथार्थोन्मुख आदर्शवादी रचनाकार थे, वे आदर्श के मोह से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाए. जिसकारण वे स्त्री चरित्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन का चित्रण नहीं कर पाए परन्तु स्त्री व्यथा से वे गहरे रूप में अभिभूत थे जिसका निदर्शन उनके साहित्य में हमें मिल जाती है.

सन्दर्भ सूची

1. प्रेमचंद, कर्मभूमि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 21
2. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011
3. गोपाल, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
4. शर्मा, रामविलाश, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011